श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

श्री शत्रुंजय-मुक्ति — सा विद्या या विमुक्तये — सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

शत्रुंजय अकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१

सम्यग्ज्ञान विशारद

अभ्यासक्रम क्रं. :

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

March - 2024

ऐनरोलमेन्ट नंबर 10

शहर ____________________

विद्यार्थी का नाम ____________________

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	युग प्रधान
(२)	ऐरंड के फल
(३)	श्री जिनहंस मुनि
(४)	आत्मा
(५)	व्यंतर देव
(६)	आत्म वैभव
(७)	पुरस्चर्या
(८)	महाप्राणायाम
(९)	मतावलंबी
(१०)	उत्कृष्ट सुख
(११)	लीलाधर शाह
(१२)	चिदानंदमय
(१३)	नागिल
(१४)	आत्म प्रदेश
(१५)	जिनेश्वर देवो के पूजन से
(१६)	उलटा श्वेत छत्र
(१७)	घ्राणेन्द्रिय
(१८)	धर्मास्तिकाय
(१९)	इंद्रियो के स्वामी
(२०)	महान पुण्य के

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	पद्मसिंह शाह
(२)	सिद्ध भगवंतो के
(३)	जामनगर मे
(४)	कुरगडु
(५)	उपसर्गो
(६)	अल्पबहुत्व
(७)	श्रोतेन्द्रिय
(८)	अभव्य
(९)	उगता सूर्य
(१०)	मनवचन काया
(११)	स्थूलिभद्र
(१२)	बाहुबली
(१३)	वाचक विनयसार
(१४)	मद
(१५)	मुषाह
(५)	
(६)	पाले है
(७)	मन को हरने वाली
(८)	इंद्रदेव
(९)	ग्रंथरूपी समुद्र
(१०)	उपर कहे अनुसार
(११)	भेद
(१२)	निवृत्ति
(१३)	तिरछी
(१४)	सूक्ष्म
(१५)	निश्चय
(१६)	अधिक
(१७)	शिष्य
(१८)	भवनपति
(१९)	पाए
(२०)	सुलभ

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	कुंभार
(२)	आत्महित
(३)	आकाश
(४)	मोक्षपद

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	10	(६)	1
(२)	9	(७)	4
(३)	7	(८)	5
(४)	6	(९)	2
(५)	8	(१०)	3

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	302
(२)	45 लाख
(३)	500
(४)	98
(५)	24
(६)	4
(७)	8
(८)	19
(९)	13
(१०)	5000

प्रश्न-६ ✓ या × / प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	✓	(१)	18
(२)	×	(२)	4
(३)	×	(३)	3
(४)	✓	(४)	7
(५)	✓	(५)	15
(६)	×	(६)	22
(७)	✓	(७)	15
(८)	×	(८)	9
(९)	✓	(९)	5
(१०)	×	(१०)	19

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ____________________ जांचनेवाले की सही ____________________

Ans →

प्रश्न - ८

Ans→१. किन जिवो की संख्या कम, किन जीवो की अधीक इसकी जानकारी जीवो कि 'अल्प-बहुत्व' कहलाती है। पर्याप्त मनुष्य सबसे कम उससे अधीक असंख्यात गुना बादर अग्नीकाय, उससे असंख्यात गुना वैमानीक देव उससे भी असंख्यात गुना भवनपति व उससे भी असंख्यात गुना नारकी है। इसका सुक्ष्मता से गहराई से विचार करे तो विश्वमे रहे हुवे सभी जिवो मे सबसे कम मनुष्य है। यह मानवभव कि दुर्लभता उजागर करता है। ऐसे मानव भव कि प्राप्ती पुण्ययोग से हुई है, उसमे सुंदर आराधना करके भवभ्रमण मर्यादीत करे।

२.Ans→ एक एक इंद्रियो की गुलामी हिरण, पंतगे, भ्रमर, मछली, एव हाथी को मौत के घाट उतारती है, दुःखी दुःखी कर देती है, तो जो पांच -पांच इंद्रियो के गुलाम मानव उसकी क्या हालत होगी वो कैसे सुख पायेगा?

इंद्रीयो की गुलामी यह सुख का दुःख का मार्ग है। सुख का मार्ग इंद्रीयो को जितने से मिलता है। कामभोग मे सुख नही, सुखाभास है, सच्चा सुख तो आत्मविभोर बनने मे यह बात स्थुलिभद्रजी साबीत कर बताई है।

३.Ans→ दुष्कर तप करने वाले तपस्वी अनेक कर्मो को जलाकर राख करते है। पर यदि तप का अभिमान आ जाये तो तप मद से उसके फल हार जाते है। कुरगडु मुनी के साथ के साथी मुनीवर को तप का अभिमान हुवा था। साथी मुनी तपस्वी थे, महा-तपस्वी थे, पर तप का अभिमान रोम रोम मे व्याप्त था। आराधना का अभिमान जिवन को ऊपर चढाने के बजाय निचे उतारती है। भान भुलाती है। कुरगडु मुनी तप न करने पर भी स्वयं कि आहारसंज्ञा कि निंदा करते करते, कर्म खपाकर केवली बने।

४.Ans→ मंत्री बंधु कुरपाल-सोनपाल ने आगरा मे दो जिनालय बंधवाये। किसी के कान भरने पर सम्राट ने हुक्म दिया कि यदी प्रतिमा मे चमत्कार न दिखाये तो मंदीर ध्वस्त करने मे आयेगे। कल्याणसुरी के सुचन से जहांगीर द्वारा प्रतिमा को वंदन करने पर पाषाण प्रतिमा एक हाथ ऊपर करके सम्राट को उच्च स्वर मे 'धर्मलाभ' दिया। चमत्कृत होकर सम्राट ने दस हजार स्वर्ण मुद्रिकाये सुरी के चरणो मे दान दी।

५.Ans→ सिद्धो कि गती उर्ध्वगती कही जाती है। कोई भारी वस्तु निचे कि तरफ जाती है, जो हलकी वस्तु है व ऊपर कि तरफ जाती है। आत्मा कर्मरहीत होने से आत्मा का स्वभाव ऊपर जाने का है। एरंडफल के बिज के समान सिद्ध परमात्मा उर्ध्वगती होती है। वैसे ही कर्मरुपी बंधन तुटने से सिद्ध भगवंतो की उर्ध्वगती होती है। उर्ध्वगती के हेतु पूर्वप्रयोग, असंग, बंध विच्छेद व स्वभाव चार हेतु से जीव कर्मक्षय करते ही सिद्धशिला के ऊपर स्थिर होते है।